

(I) सीमान्त उपयोगिता
(MARGINAL UTILITY)

किसी आवश्यकता की पूर्ति करने के लिये मनुष्य किसी वस्तु विशेष की विभिन्न इकाइयों का प्रयोग करता है। उपभोग के क्रम में वस्तु की अन्तिम इकाई को सीमान्त इकाई तथा उससे प्राप्त उपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता कहते हैं (Marginal Utility is the utility derived from the last or marginal unit of consumption)। वस्तुतः सीमान्त उपयोगिता की दी गयी यह परिभाषा उपयुक्त प्रतीत नहीं होती है। यही कारण है कि आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने सीमान्त उपयोगिता की परिभाषा अलग ढंग से दी है, जो इस प्रकार है—“किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे सीमान्त उपयोगिता कहते हैं।” सीमान्त उपयोगिता की परिभाषा प्रो. बौल्डिंग ने इस प्रकार दी है—“किसी वस्तु की किसी मात्रा की सीमान्त उपयोगिता कुल उपयोगिता में वह वृद्धि है जो वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है”

“The marginal utility of any quantity of a commodity is the increase in total utility which result from a unit in its consumption.” —Boulding

सीमान्त उपयोगिता को एक उदाहरण द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया कि मि. अमित 7 रोटियों का उपभोग करता है। रोटी की पहली इकाई से उसे 10 के बराबर उपयोगिता मिलती है, दूसरी इकाई से 8, तीसरी इकाई से 6, चौथी इकाई से 4, पाँचवीं इकाई से 2, छठी इकाई से शून्य तथा सातवीं इकाई से -2 (ऋणात्मक) के बराबर उपयोगिता मिलती है। यदि वह केवल पाँच रोटी का ही उपभोग करता तो पाँचवीं रोटी सीमान्त इकाई होती तथा सीमान्त उपयोगिता 2 होती। यदि वह केवल चार रोटियों का ही प्रयोग करता तो चौथी इकाई सीमान्त इकाई होती तथा सीमान्त उपयोगिता भी 4 ही होती। इसी प्रकार यदि वह 3 रोटियों का उपभोग करता तो तीसरी रोटी सीमान्त रोटी (इकाई) होती तथा प्राप्त सीमान्त उपयोगिता 6 होती। इसी प्रकार.....।

सीमान्त उपयोगिता के प्रकार
(KINDS OF MARGINAL UTILITY)

सीमान्त उपयोगिता के तीन प्रकार होते हैं :

- (i) धनात्मक सीमान्त उपयोगिता (Positive Marginal Utility),
- (ii) शून्य सीमान्त उपयोगिता (Zero Marginal Utility) तथा
- (iii) ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता (Negative Marginal Utility)।

जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है, उपभोक्ता ज्यों-ज्यों अधिक इकाइयों का उपभोग करता जाता है, त्यों-त्यों उनसे प्राप्त सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है। जब तक उपभोक्ता को उत्तरोत्तर इकाइयों के उपभोग से कुछ न कुछ सन्तुष्टि मिलती रहती है, तब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक (Positive) होती है। जब उपभोक्ता को शून्य के बराबर उपयोगिता मिलती है तो सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है। ऐसी अवस्था में उपभोक्ता को सीमान्त इकाई के उपयोग से न तो सन्तुष्टि मिलती है और न असन्तुष्टि किन्तु शून्य उपयोगिता के बाद भी यदि उपभोक्ता और उपरोक्त उदाहरण में पाँचवीं इकाई के उपभोग तक उपभोक्ता को सन्तुष्टि मिलती है, भले ही वह घटती हुई मात्रा में हो। अतः सीमान्त उपयोगिता पाँचवीं इकाई के उपभोग तक धनात्मक (Positive) है। छठी इकाई के उपभोग से उपभोक्ता को शून्य उपयोगिता मिलती है अतः वहाँ सीमान्त उपयोगिता शून्य के बराबर है लेकिन यदि उपभोक्ता छठी इकाई के बाद भी सातवीं इकाई का उपभोग करता है तो उसे ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त होगी जो कि (-2) है। इन तथ्यों को अग्र तालिका से स्पष्ट किया गया है :

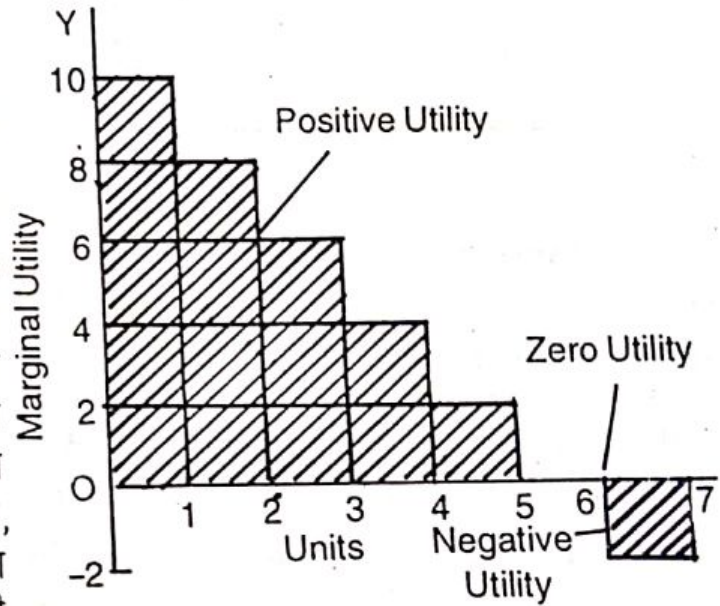
सीमान्त उपयोगिता तालिका
(Marginal Utility Table)

रोटियों की संख्या	सीमान्त उपयोगिता	सीमान्त उपयोगिता के प्रकार
1	10	धनात्मक उपयोगिता
2	8	
3	6	
4	4	
5	2	
6	0	शून्य उपयोगिता
7	-2	ऋणात्मक उपयोगिता

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि पाँचवीं रोटी के उपभोग तक धनात्मक उपयोगिता प्राप्त होती है। 6 इकाई पूर्ण सन्तुष्टि की इकाई है, अतः उससे प्राप्त उपयोगिता शून्य है। इसके बाद 7वीं इकाई पूर्ण सन्तुष्टि के बाद प्रयोग की गई इकाई है अतः उससे प्राप्त उपयोगिता ऋणात्मक हो गयी है।

उपरोक्त तालिका को रेखाचित्र के द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है:

चित्र 1 में OX-अक्ष पर रोटी की इकाइयाँ तथा OY-अक्ष पर प्राप्त सीमान्त उपयोगिता को दिखाया गया है। चित्र से स्पष्ट है कि रोटी की प्रथम इकाई से 10 उपयोगिता प्राप्त होती है, जिसे सबसे ऊँचे आयत द्वारा दिखाया गया है। इसी प्रकार 2, 3, 4, 5 रोटी की इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता क्रमशः 8, 6, 4, 2 के बराबर है। ये सभी आयत OX-रेखा के ऊपर हैं जो कि धनात्मक सीमान्त उपयोगिता को प्रदर्शित करते हैं। छठी रोटी से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता शून्य है जोकि चित्र में OX-रेखा की केवल लम्बाई द्वारा दिखाया गया है। किन्तु सातवीं रोटी की इकाई से ऋणात्मक सीमान्त उपयोगिता प्राप्त होती है और इसीलिये बनाया गया आयत OX-रेखा के नीचे है।



चित्र 1

शून्य उपयोगिता
(ZERO UTILITY)

किसी वस्तु के उपभोग के क्रम में जिस बिन्दु पर व्यक्ति पूर्ण सन्तुष्टि हो जाता है, वहाँ सीमान्त उपयोगिता शून्य हो जाती है, जिसे शून्य उपयोगिता कहते हैं।

(II) कुल उपयोगिता
(TOTAL UTILITY)

किसी दिये हुए समय में उपभोग की सभी इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता को कुल उपयोगिता कहते हैं। (Total utility is the utility from all units of consumption)

मेयर्स के अनुसार, "किसी वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों के उपभोग के परिणामस्वरूप प्राप्त सीमान्त उपयोगिताओं का योग कुल उपयोगिता है।"

“Total utility is the sum of the marginal utilities associated with the consumption of the successive units.”
—Meyers

कुल उपयोगिता को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। मान लिया कोई व्यक्ति एक समय में पाँच रोटियाँ खाता है। वह प्रथम रोटी से 10, दूसरी से 8, तीसरी से 6, चौथी से 4 एवं पाँचवीं से 2 के बराबर यानि कुल 30 के बराबर उपयोगिता प्राप्त करता है। इसे एक तालिका के द्वारा भी दिखाया जा सकता है :

कुल उपयोगिता तालिका
(Total Utility Table)

रोटियों की संख्या	सीमान्त उपयोगिता	कुल उपयोगिता
1	10	10
2	8	18 = (10 + 8)
3	6	24 = (18 + 6)
4	4	28 = (24 + 4)
5	2	30* = (28 + 2)
	Total = 30*	

(III) औसत उपयोगिता
(AVERAGE UTILITY)

उपभोग की जाने वाली वस्तु की कुल उपयोगिता में वस्तु की कुल इकाई की संख्या से भाग देने से जो भागफल आता है, उसे औसत उपयोगिता कहते हैं। निम्नलिखित तालिका द्वारा सीमान्त उपयोगिता, कुल उपयोगिता तथा औसत उपयोगिता को स्पष्ट किया गया है :

रोटी की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता	कुल उपयोगिता	औसत उपयोगिता
1	10	0 + 10 = 10	10 ÷ 1 = 10
2	8	10 + 8 = 18	18 ÷ 2 = 9
3	6	18 + 6 = 24	24 ÷ 3 = 8
4	4	24 + 4 = 28	28 ÷ 4 = 7
5	2	28 + 2 = 30	30 ÷ 5 = 6
6	0	30 + 0 = 30	30 ÷ 6 = 5
7	-2	30 - 2 = 28	28 ÷ 7 = 4

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों के उपभोग से सीमान्त एवं औसत उपयोगिता धीरे-धीरे घटती जाती है और कुल उपयोगिता तब तक बढ़ती जाती है जब तक सीमान्त उपयोगिता शून्य न हो जाय।